Dr Arti Kumari

Class - XIIth

Home Science

Date ____
Page ____

Syllabus

Unit 1 : Know Little Children
(शिशु की जानकारी) (0-3 वर्ष)

Unit 2 :- Nutrition for self and Family
(स्वयं, परिवार तथा समुदाय के लिए पोषण)

Unit 3 :- Money Management and Consumer Education
(धन व्यवस्थापन एवं उपभोक्ता शिक्षा)

Unit 4 : My Apparel (मेरा परिधान)

Unit 5 : Community Development and Extension
(सामुदायिक विकास और प्रसार)

Unit 6 : Things I can do with My Home Science Training.

(अपने गृह विज्ञान के प्रशिक्षण के द्वारा जो कार्य मैं कर सकता / सकती हूँ।

Scanned with CamScanner

UNIT-1 शिशु की जानकारी

Introduction:- परिचय
गर्भ धारण के पश्चात गर्भस्थ शिशु में वृद्धि तथा विकास प्रारंभ होता है। वृद्धि या विकास दो अलग-अलग प्रत्यय है इनके संबंध में अधिक कहने से पूर्व इनके अर्थ को अलग-अलग समझना आवश्यक है।

(Meaning of Growth) विकास के अपेक्षा विवृद्धि एक संकुचित प्रत्यय है। गर्भधारण के पश्चात ही गर्भस्थ शिशु में विकास होने लगती है। विकास बालक के शरीर और आकार लंबाई और भार में ही नहीं होती है बल्कि उसके आंतरिक अंगों तथा मस्तिष्क में भी होती है। मस्तिष्क में जैसे-जैसे वृद्धि होती जाती है बालक में सीखने, स्मरण एवं तर्क आदि की अधिक क्षमता आ जाती है। वृद्धि परिमाणात्मक परिवर्तन से संबंधित है यह वृद्धि गर्भधारण के बाद ही गर्भस्थ शिशु से शुरुआत होकर परिपक्वावस्था तक चलती है।

किसी भी बच्चे के शारीरिक एवं क्रियात्मक विकास की कोई सीमा नहीं होती। लेकिन फिर भी उसके विकास का एक निश्चित प्रतिरूप होता है। बच्चे की लंबाई में प्रतिवर्ष कितनी वृद्धि होगी इस बात का कोई भी निश्चित अनुमान नहीं लगाया जा सकता है कि उसके भार में कितनी वृद्धि होगी? लेकिन फिर भी प्रत्येक बच्चे की विकास का एक ~~निश्चित~~ निश्चित प्रतिरूप होता है। बच्चों के व्यक्तित्व में विभिन्नताएं पायी जाती है। बच्चों में क्रियात्मक स्तर तथा

विकास स्तरीय मील के पत्थर जैसे आयु स्तर में भी भिन्नताएं होती हैं। विकास के सिद्धांत तथा विशेषताएँ सार्वभौमिक नमूने होते हैं।

वृद्धि

जीवन के एक पहलू से दूसरे पहलू में परिवर्तन अर्थात जन्म से पूर्व अथवा गर्भकालीन अवस्था जन्म के बाद

जन्म के बाद विकास को विस्तृत रूप से इन आयु श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है।

मानव विकास की विभिन्न अवस्थाएँ :-

(1) गर्भावस्था - गर्भधान से जन्म तक
(2) शैशवावस्था - जन्म से 2 सप्ताह
(3) उत्तर शैशवावस्था - 2 सप्ताह - 2 वर्ष
(4) बाल्यावस्था - 2 वर्ष से 12 वर्ष
(5) किशोरावस्था - 12 से 21 वर्ष
(6) प्रौढावस्था - 21 से 40 वर्ष

विकास केवल शारिरिक आकार तथा अनुपात में ही परिवर्तन नहीं होता है बल्कि यह विभिन्न संरचनाओं तथा कार्यों को इकट्ठा करने की एक जटिल प्रक्रिया है।

एक बालक की शारिरिक वृद्धि उसकी लंबाई भार तथा अन्य शारिरिक परिवर्तनों में ही वृद्धि होना आयु के अनुसार ही बालक के बाल आते हैं दाँत आते हैं तथा दूध के दांत गिरते व नए दांत आते हैं वृद्धि तथा विकास में न केवल वे शारिरिक परिवर्तन सम्मिलित हैं जो बाल्यावस्था से किशोरावस्था में पाए जाते हैं बल्कि कुछ अन्य परिवर्तन भावनाएं या संवेग व्यक्तित्व सोच वाणी जिसे बालक विकसीत करते हैं चूंकि वे अपने चारों ओर की

Scanned with CamScanner

दुनियाँ को समझना तथा उसके साथ क्रिया करना प्रारंभ करते हैं, आदि परिवर्तन भी सम्मिलित होते हैं

शारिरिक विकास के मीलपत्थर सिर से पंजे की ओर अग्रसर होते हैं। अतः बालक पहले अपने सिर पर नियंत्रण रखना सीखता है तब शरीर भुजाओं तथा टाँगों पर नियंत्रण रखना सीखता है ये मील पत्थर माता पिता को चिकित्सा संबंधी राय बताने के लिए एक मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

क्रियात्मक विकास को प्रभावित करने वाले कारक

(1) शारिरिक बनावट :- यदि बालक के शरीर के सभी अंग सामान्य अनुपात में हैं तो बालक का विकास भी सामान्य रहता है।

(2.) पोषण :- अगर बालक कुपोषण का शिकार है तो इसका प्रभाव उसकी मांसपेशियों के विकास पर पड़ेगा। फलस्वरूप बालक का क्रियात्मक विकास नहीं हो पाएगा।

(3.) प्रशिक्षण एवं अभ्यास :- यदि बालक को कौशल विकसीत करने का बराबर अवसर व प्रशिक्षण दिया जाए तो वह जल्दी ही निपुण हो जाते हैं।

(4) अभिप्रेरणा :- यदि बालक को किसी भी कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाए तो उसकी प्रतिक्रियाएं शीघ्र विकसीत होती हैं।

(5) प्रबलन :- उचित प्रक्रिया को सुदृढ़ करने के लिए प्रबलन बहुत सहायक होता है। यदि बालक की उपलब्धि पर अभिभावक प्रबलन देते हैं तो वह भविष्य में बड़ी उपलब्धि में प्रयासरत रहेगा।

Scanned with CamScanner

लघु क्रियात्मक विकास श्रृंखला आयु (0-3 वर्ष)

- हाथ अधिकांशत: बंद रहते हैं।
- शिशु हाथों को मोड़कर पकड़ बनाते हैं वस्तुओं को हथेली की सहायता से पकड़ते हैं।
- 3-7 माह छोटी वस्तुओं को हाथ में पकड़ सकता है।
- 7-12 माह - अंगुठे तथा सभी अँगुलियों के सहायता प्रयोग से छोटी वस्तुओं को उठाने में समर्थ।
- 2 वर्ष :- अँगुठे तथा सभी अँगुलियों के सहायता से खड़िया पकड़ना आगे की ओर भुजाओं को मोड़ना इससे अंगुठा नीचे हो जाता है।
- जूता मोजे तथा हाफ पैर को पहनना, जूतो तथा मोजे उतारना
- 2 वर्ष का बालक स्वंय चम्मच का प्रयोग कर सकता है इसे उचित स्थान पर रख सकता है।

ज्ञानात्मक विकास (2-3 वर्ष)

सीखने की प्रक्रिया और अधिक विचारणीय हो गई है भाषा पर उसकी पकड़ बढ़ जाती है तथा वही चीज, क्रियाओं तथा संकल्पनाओं के लिए मानसिक रचना बनाना प्रारंभ कर रहा है। वह समस्या को हल करने के लिए अपने मस्तिष्क से मानसिक मार्ग बना सकता है तथा जैसे ही उसकी स्मरण तथा अध्यात्मिक योग्यताए विकसीत होती है वह साधारण समय को समझना प्रारंभ कर देता है जैसे कि "भोजन समाप्त करने के बाद तुम खेल सकते हो

लड़खड़ाने वाला बालक भी वस्तुओं के मध्य संबंध समझना प्रारंभ कर देता है। उदाहरण के लिए जब आप उसे एक ही प्रकार के खिलौने छाँटने के लिए देगें तो वह अपनी उनकी

बच्चे आकृति का मिलान करने में समर्थ होगा। वह गिनने वाली वस्तु में संख्याओं के उद्देश्य को पहचानना प्रारंभ करेगा विशेषकर 2 की संख्या। 2 वर्ष की आयु के पश्चात तर्कशक्ति प्रायः कठिन हो जाती है। इन सबके बाद वह प्रत्येक वस्तु को और अधिक साधारण ढंग से देखता है वह अभी वास्तविकता के साथ कल्पना का प्रयोग करता रहता है।

समय का ज्ञान :- लगभग 3 वर्ष की आयु में बालक को समय का ज्ञान और अधिक स्पष्ट हो जाएगा। बालक स्वयं की प्रतिदिन की दिनचर्या को जानेगा तथा दूसरों की दिनचर्या की गणना का कठिन प्रयास करेगा।

भाषा विकास

भाषा के माध्यम से बालक अपने विचारों, इच्छाओं तथा भावनाओं को दूसरों पर व्यक्त कर सकता है। और दूसरों के विचारों इच्छाओं तथा भावनाओं को समझ सकता है।

सामाजिक विकास

बच्चों के सामाजिक विकास में सामाजीकरण का महत्वपूर्ण स्थान है। सामाजीकरण जन्म से मृत्यु तक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। बच्चों के सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक हैं।

(1) परिवार :- इसमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण कारक उसका परिवार है, क्योंकि परिवार ही बच्चे के सामाजिक मानकों का आदर करता है और आचरण करता है तो आगे चलकर बच्चे के सामाजिक व्यक्ति बनने की सम्भावनाएं हैं।

Scanned with CamScanner

(2) पास पडोस - दो वर्ष का बच्चा अपने आस-पडोस में जाने लगता है। दूसरे बच्चों के संपर्क में आता है। जहाँ घर में सभी उसको हर वस्तु पहले दिया करते हैं। वह सबके साथ मिलकर खेलना सीखता है। अगर पास पडोस में भी लोग उसे प्यार करते हैं तो यह उनके प्रति स्वस्थ-सामाजिक मूल्यों का निर्माण करता है।

(3) विद्यालय :- तीन वर्ष का बच्चा विद्यालय जाने लगता है और सामाजिक मूल्यों को तेजी से सीख जाता है। स्कूल में शिक्षकों व साथियों के सम्पर्क में आता है। गीत संगीत नाटक आदि खेलों में भाग लेता है।

(4) तीज त्योहार व परम्पराएँ :- हर समाज की अपनी परम्पराएँ व तीज त्योहार होते हैं। उनको मनाने सभी लोग एकत्रित होते हैं। जैसे रक्षाबंधन दीपावली - ईद आदि। बच्चा देखता है कि एक दूसरे के बिना त्योहार ~~मनाना~~ मनाना सम्भव ही नही है खुशी के लिए समाज में सभी लोगों का होना आवश्यक है। यही सामाजिकरण का पाठ हमारी संस्कृति व त्योहार सिखाते हैं।

इस प्रकार परिवार स्कूल साथी आस-पडोस सभी किसी न किसी प्रकार से बच्चों के सामाजिकरण में सहायक होते हैं। माता पिता शिक्षक दोनो ही अपने स्तर पर बच्चों का मार्ग दर्शन करते हैं कि बच्चे को क्या करना चाहिए और क्या नही।

संवेगात्मक विकास

बालक के जीवन में संवेगों का विशेष महत्व है। संवेग से व्यक्ति इतना अधिक प्रेरित हो जाता है कि वह बड़े-बड़े कार्य करने के लिए तत्पर हो जाता है।

<u>बालकों के संवेगों की विशेषताएं</u> (1) बालकों के संवेग वयस्क व्यक्तियों की अपेक्षा शीघ्र उत्पन्न होते हैं संवेगों की आवृत्ति अधिक होती है। विभिन्न संवेगों प्रेम क्रोध घृणा, भय, हर्ष, ईर्ष्या कुछ कुछ समय बाद आती है।

(2) बालकों मे संवेग क्षणिक होते हैं वे कुछ समय तक ही रहते हैं बालकों के अपेक्षा वयस्कों में यदि कोई संवेग एक बार उत्पन्न हो गया तो वह काफी समय तक उपस्थित रहता है।

(3) बालको के संवेगात्मक व्यवहार मे व्यक्तिगत भिन्नता पाई जाती है। यदि कोई बालकों के एक विशिष्ठ संवेगात्मक व्यवहार की तुलना की जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि इस संवेगात्मक व्यवहार में समानता के साथ साथ अंतर भी पाया जाता है जैसे भय, क्रोध, प्रेम, घृणा आदि

(4) बालको के संवेगों की तीव्रता अधिक होती है उनका अपने संवेगों पर नियंत्रण नही होता है इसी कारण क्रोध में वे हाथ पैर पटकने लगते हैं और जमीन पर लोटने लगते हैं।

(5) बालकों के संवेगों में विशिष्ठ लक्षण पाए जाते हैं। उनके संवेगात्मक व्यवहार को देखने से पता चलता है कि उनके व्यवहार में कुछ विशिष्ठ लक्षण पाए जाते हैं। जैसे दांत किटकिटाना, अंगूठा चूसना, हाथ पैर पटकना आदि।

रोगक्षमता :-

रोगक्षमता का अर्थ है — "व्यक्ति के रोग तथा रोगों से लड़ने की क्षमता या योग्यता। अतः रोग-क्षमता का अर्थ हुआ शरीर को रोगों से बचाने की क्षमता

रोगक्षमता का विकास :- हमारे शरीर को भिन्न भिन्न रोगाणुओं से लड़ने के लिए भिन्न-भिन्न प्रतिद्रव्यों की आवश्यकता होती है जो सूक्ष्म जीवाणु तथा रोगाणु शत्रु समझे जाते है। इनमें ऐसे एंटीजन या प्रतिजन होते है जो शरीर में एंटीबॉडी या प्रतिद्रव्य उत्पन्न करने के लिए शरीर की प्रतिरक्षा को बढ़ाते है।

रोग क्षमता के प्रकार

रोगक्षमता दो भागों में विभक्त होती है।

(a) प्राकृतिक या जन्मजात रोगक्षमता।
(b) कृत्रिम या उपार्जित रोगक्षमता।

रोगक्षमता के प्रकार
- प्राकृतिक या जन्मजात
- कृत्रिम या उपार्जित
  - स्वाभाविक या प्राकृतिक रूप से रोग के पश्चात
  - कृत्रिम टीका लगाकर तथा निवेशन द्वारा

(i) **प्राकृतिक या जन्मजात रोगक्षमता :-** यह क्षमता शरीर में प्राकृतिक रूप से पाए जानेवाले रोग-विरोधी तत्वों के कारण होती है। शरीर में रोग प्रतिरोधी तत्व निम्नलिखित कार्य करते है।

(1) रोगाणुओं का शरीर में प्रवेश रोकते है।

Page No.:
Date: / /

(2) यदि रोगाणु शरीर में प्रविष्ट हो जाए तो उनसे संघर्ष करते हैं
(3) रोगाणुओं को नष्ट कर देते हैं जिससे वह रोग के बाह्य लक्षणों को प्रकट न कर सकें।

शरीर में प्राकृतिक रोग विरोधी क्षमता तभी बनी रह सकती है जब शरीर में उपस्थित श्वेत रक्त कण शक्तिशाली हो ऐसा तभी सम्भव है जब

(i) व्यक्ति का आहार संतुलित तथा पौष्टिक हो।
(ii) उसने जन्म के तत्काल बाद कोलेस्ट्रम तथा माता का दूध लिया हो

प्रसव के तत्काल बाद 24-48 घंटों के अंदर माता के स्तनों से दूध आने लगता है परंतु आरंभ के दो तीन दिनों तक स्तनों से गाढ़ा पीले रंग का द्रव्य पदार्थ निकलता है इसे कोलेस्ट्रम कहा जाता है। इस दूध में प्रोटीन, विटामिन ए तथा प्रतिरोधक तत्वों की आवश्यकता होती है। यह कोलेस्ट्रम 10 मि.ली. से 40 मि. ली. की मात्रा तक ही निकलता है और इसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता के द्वारा पाचक रसों का निर्माण होता है जो बच्चों के कई बिमारियों से बचाता है।

(i) शिशु को स्तनपान कराने से माता तथा शिशु दोनों को संतोष प्राप्त होता है
(ii) माता के दूध शिशु को शारिरिक रूप से स्वस्थ रखता है तथा भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करता है
(iii) माता के दूध को शिशु स्तनों से प्रत्यक्ष ही ग्रहण करता है इसलिए उसमें रोगाणुओं की उपस्थिति की सम्भावना नही होती है।
(iv) स्तनपान कराने से शिशु में रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है।
(v) स्तनपान पाँच वर्ष से कम आयु की बाल मृत्यु को 1/3 तक रोकता है।
(vi) माता के दूध में पाया जाने वाला प्रोटीन लैक्टो-एल्बयूमिन शिशु ठीक प्रकार से पचा सकता है।

(2.) <u>कृत्रिम या उपार्जित रोधक्षमता</u> :- यह दो प्रकार का होता है।
(i) <u>संक्रामित रोग से ग्रसित होकर</u> :- संक्रामक रोग से ग्रसित होने पर जब व्यक्ति स्वस्थ हो जाता है तब उसमें उस रोग के प्रति प्रतिरोधक क्षमता उत्पन्न होती है। इस प्रकार अर्जित की गई रोग प्रतिरोधक क्षमता को उपार्जित रोग प्रतिरोधक क्षमता कहते हैं।
(ii) <u>टीकाकरण द्वारा</u> :- टीकाकरण के द्वारा विभिन्न संक्रामक रोगों की

Scanned with CamScanner

प्रतिरक्षक दवाइयाँ शरीर में टीकों के माध्यम से प्रविष्ट करायी जाती है। इन दवाईयों शरीर में टीके के माध्यम से प्रविष्ट करायी जाती है। इन दवाईयों से रक्षण अवधि को दीर्घ काल तक बनाए रखने के लिए अन्य खुराक भी दी जाती है। इस प्रकार टीकाकरण द्वारा विभिन्न जानलेवा बीमारियों से बचाव किया जाता है।

रोग का नाम	रोग फैलने का माध्यम	रोग नियंत्रण की विधि
(1) क्षय रोग (2) काली खाँसी (3) शीत ज्वर (4) खसरा (5) शीतला	दूषित वायु	(1) संक्रमित बालक नाक व मुँह साफ करने के लिए टिशु पेपर का प्रयोग करें। (2) छींकने व खाँसने पर व्यक्ति अपना मुँह तथा नाक टिशु पेपर से ढक ले (3) टिशु को फेंकने की उचित व्यवस्था करें
(1) हैजा (2) पीलिया (3) पोलियो (4) अतिसार	प्रदूषित भोजन	(1) गंदे हाथ व अंगुलियों से मत खाइए (2) पीने के लिए उबले पानी का प्रयोग होना चाहिए। (3) मक्खियों से बचिए तथा स्थान साफ रखिए। ~~(4) भोजन से बचिए तथा स्थान साफ रखिए~~ (4) भोजन से पहले तथा खाने के बाद अच्छी तरह हाथों को धोना।
(1) टिटनेस (2) कृमि	मिट्टी प्रदूषण	(1) घाव को अच्छी तरह सैन्टिसेप्टिक से साफ करे (2) मिट्टी से फैलने वाले रोगों से बचाव
(1) मलेरिया	जीवाणु एवं विषाणु तथा कीटाणु के प्रभाव	(1) पूरी बाँहों के कपड़े पहनना। (2) मच्छरदानी का प्रयोग करना। (3) वातावरण स्वच्छ रखें।
(1) डिप्थीरिया (2) खुजली (3) दाद या खुजली	प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संपर्क	(1) रोगी बालकों के खिलौनो का प्रयोग न करें (2) अच्छी देखभाल की व्यवस्था रखें (3) रोगी व्यक्तियों के संपर्क से बचें।

Scanned with CamScanner

टीकाकरण-तालिका

(1) गर्भाधान के पश्चात बच्चे के जन्म से 1 माह पूर्व माता को लगाया जानेवाला टीका	(1) माह के अंतराल पर टिटेनस के दो टीके गर्भिणी स्त्री को। (2) हेपेटाइटिस बी तथा पोलियो की पहली खुराक
(2) बच्चे के जन्म के पश्चात बच्चे को लगाए जाते हैं। जन्म के पश्चात एक माह तक। 1½ माह की आयु में-	(1) बी. सी. जी का टीका (2) D.P.T का पहला टीका (1) पोलियो की पहली खुराक (iii) हेपेटाइटिस बी. को टीका
(3) 2½ माह की आयु में —	(1) डी.पी.टी. का दूसरा टीका (ii) पोलियो का दूसरा खुराक (iii) हेपेटाइटिस बी. का टीका
(4) 3½ माह की आयु में —	(1) पोलियो की तीसरी खुराक (ii) हेपेटाइटिस बी का टीका खसरे की टीका
9 से 12 माह के आयु में	(1) डी.पी.टी का बूस्टर टीका
15 से 18 माह की आयु में	(ii) पोलियो का बूस्टर टीका (iii) एम. एम. आर (M.M.R) का टीका
16 से 24 माह की आयु में -	(1) हैजे का टीका (ii) डी.पी.टी का बूस्टर टीका (iii) पोलियो का बूस्टर टीका टायफाइड का टीका
2 वर्ष की आयु में 5-6 वर्ष की आयु में	(1) डी.पी.टी का बूस्टर टीका (ii) पोलियो का बूस्टर टीका (iii) टाइफायड का बूस्टर टीका
10 वर्ष की आयु मे	(i) टिटनेस का बूस्टर टीका (ii) टायफाइड का बूस्टर टीका
16 वर्ष की आयु में	(1) टिटनेस का बूस्टर टीका (ii) टायफाइड का बूस्टर टीका

प्रतिरक्षण अनुसूची

पूर्व शैशवावस्था में ही खतरनाक रोगो से पूर्ण बचाव के लिए हमें बच्चों के लिए प्रतिरक्षा तालिका बनानी चाहिए

(1) क्षय रोग/तपेदिक( )इस रोग को T.B तपेदिक या ट्यूबरकुलोसिस भी कहा जाता है। यह रोग वायु के द्वारा फैलता है

Page No.
Date:

टीकाकरण तालिका

(1) गर्भाधान के पश्चात बच्चे के जन्म से 1 माह पूर्व माता को लगाया जानेवाला टीका — (1) माह के अंतराल पर टिटेनस के दो टीके गर्भिणी स्त्री को। (2) हेपेटाइटिस बी तथा पोलियो की पहली खुराक

(2) बच्चे के जन्म के पश्चात बच्चे को लगाए जाते हैं जन्म के पश्चात एक माह तक। 1½ माह की आयु में — (1) बी.सी.जी का टीका
(11) D.P.T का पहला टीका
(11) पोलियो की पहली खुराक
(111) हेपेटाइटिस बी की टीका

(3) 2½ माह की आयु में — (1) डी.पी.टी. का दूसरा टीका
(11) पोलियो का दूसरा खुराक
(111) हेपेटाइटिस बी. का टीका

(4) 3½ माह की आयु में — (1) पोलियो की तीसरी खुराक
(11) हेपेटाइटिस बी का टीका खसरे की टीका

4 से 12 माह के आयु में — (1) डी.पी.टी का बूस्टर टीका
15 से 18 माह की आयु में — (11) पोलियो का बूस्टर टीका
(111) एम.एम.आर (M.M.R) का टीका

16 से 24 माह की आयु में — (1) हैजे का टीका
(11) डी.पी.टी का बूस्टर टीका
(111) पोलियो का बूस्टर टीका टायफाइड का टीका

2 वर्ष की आयु में 5-6 वर्ष की आयु में — (1) डी.पी.टी का बूस्टर टीका
(11) पोलियो का बूस्टर टीका
(111) टाइफायड का बूस्टर टीका

10 वर्ष की आयु मे — (1) टिटनेस का बूस्टर टीका
(11) टायफाइड का बूस्टर टीका

16 वर्ष की आयु में — (1) टिटनेस का बूस्टर टीका
(11) टायफाइड का बूस्टर टीका

प्रतिरक्षण अनुसूची

पूर्व शैशवावस्था में ही खतरनाक रोगो से पूर्ण बचाव के लिए हमें बच्चों के लिए प्रतिरक्षा तालिका बनानी चाहिए

(1) क्षयरोग/तपेदिक( ) इस रोग को T.B तपेदिक या ट्यूबरकुलोसिस भी कहा जाता है। यह रोग वायु के द्वारा फैलता है

इस रोग को फैलानेवाले जीवाणु का नाम ट्यूबर्किल बैसिलस है। यह रोग बहुत ही भयानक है जो शरीर के कई भागों में हो सकता है। जैसे - फेफड़ों का तपेदिक, आँतों का तपेदिक, ग्रंथियों का तपेदिक, रीढ़ की हड्डी की तपेदिक। इनमें से फेफड़ो का तपेदिक सबसे अधिक फैलता है। यह रोग मनुष्यों के अतिरिक्त जानवरों को भी हो सकती है। यह रोग रोगी गाय, भैंस का दूध पीने से भी हो जाता है। दूध को भली-भाँति से उबालकर प्रयोग में लाने से इसके जीवाणु नष्ट हो जाते हैं।

उद्भवन काल - ४-६ सप्ताह लक्षण

(1) भार में गिरावट

(2) तेजी से पसलियों का चलना।

(3) कमजोरी तथा बुखार

(4) खाँसी

कारक प्रतिनिधि :- ट्यूबर्किल बैसीलस जीवाणु

संक्रमण काल (i) वायु
(ii) संक्रमित प्राणियों की छोड़ी हुई श्वास द्वारा

घटित होने की आयु :- जन्म से सभी आयु के बालक

उपचार अवधि :- (i) लम्बी अवधि तक देखभाल
(ii) उचित इलाज

रोगी की देखभाल :- (i) बालक को स्वच्छ कमरे में रखे
(ii) नाक तथा गला स्त्राव में प्रयोग होने वाली वस्तुओं को फेकनें की सुरक्षित तथा उचित व्यवस्था रखें।

(iii) जन्म के समय संक्रमण से बचाने के लिए शिशु को क्षय रोग पीड़ित माता से अलग रखना चाहिए।

रोकथाम :- जन्म के ~~स्थान~~ समय या दो सप्ताह के भीतर बी.सी.जी. का टीका लगवायें।

(2) डिप्थीरिया :- यह अत्यन्त भयानक संक्रामक रोग है, जो कोरीनेबैक्टीरियम डिप्थीरिए नामक जीवाणु के कारण होते हैं। यह जीवाणु शरीर में प्रवेश करके गले में पनपते हैं। और बच्चों में रोग के लक्षण उत्पन्न करते हैं।

उद्भवन काल :- २-५ दिन का उद्भवन काल होता है।

लक्षण (1) प्रारंभ में रोगी के गले में हल्का दर्द होता है तथा सूजन आ जाती है।

Scanned with CamScanner

(ii) रोगी को तीव्र बुखार आ जाता है।

(iii) श्वास नली के उपर सलेटी रंग की झिल्ली बन जाती है जिससे खाद्य पदार्थ निगलने में कठिनाई होती है।

(iv) तलवे पैर भुजाओं तथा टांगों की मासपेशियों का लकवा-

कारक प्रतिनिधि :- कोरीने बैक्टीरियम डिप्थीरियम।

संक्रमण काल :— इस रोग के जीवाणु वायु, संदूषित दूध तथा भोजन के माध्यम से रोग फैलाते हैं।

घटने की आयु :- जन्म से 5 वर्ष की आयु तक का रोग हो सकता है

रोगी की देखभाल :- (i) शिशु को संक्रमित शिशु तथा संक्रमित खिलौनों से दूर रखना चाहिए। रोग के लक्षण समाप्त हो जाने के बाद भी रोगी को अन्य स्वस्थ शिशुओं से अलग रखना चाहिए

(ii) यदि रोग का संक्रमण तीव्र हो तो रोगी को संक्रामक रोग के अस्पताल में रखना चाहिए।

रोकथाम :- इसकी तीन खुराक 6 सप्ताह से आरंभ करके 4-6 सप्ताह के अन्तराल पर दी जाती है।

(3) खसरा :— यह एक संक्रामक रोग है जो ~~ज्वर~~ ज्वर तथा खाँसी के साथ स्पष्ट होता है। यह रोग अधिकतर बच्चों को हो जाता है रोगी को खाँसने तथा छींकने से रोगाणु वायु को दूषित कर देते हैं। इस दूषित वायु में स्वस्थ व्यक्ति जब साँस लेते हैं तो वह भी रोगी हो जाता है।

उद्भवन काल :- खसरे का उद्भवन काल 10-12 दिन तक रहता है।

लक्षण (i) इस रोग का प्रारंभ खाँसी तथा जुकाम से होता है।

(ii) इसके पश्चात तीव्र ज्वर चढ़ता है।

(iii) इस रोग का संक्रमण काल 3 सप्ताह तक होता है।

(iv) दो तीन के बाद माथे पर छोटे-छोटे दाने निकल आते हैं बाद में यह दाने पूरे शरीर में फैल जाते हैं।

(v) धीरे-धीरे ज्वर कम हो जाता है और दाने सूख जाते हैं

कारक प्रतिनिधित्व :- विषाणु जनित रोग

संक्रमण काल :- नाक तथा गले के स्त्राव के संपर्क द्वारा यह रोग फैलता है।

घटित होने की आयु :- कुछ माह से 8 वर्ष तक कभी भी यह रोग हो सकता है।

Scanned with CamScanner

उपचार अवधि :- इस रोग की उपचार ग्यारह दिन तक लेना चाहिए।

रोगी की देखभाल :- (i) रोगी व्यक्ति के कमरे को साफ रखे।

(ii) कमरे मे हल्की रोशनी की व्यवस्था करे।

(iii) संक्रमित व्यक्ति से बच्चो को दूर रखे।

(4) पोलियो :- सबीन द्वारा विकसीत मौखिक पोलियो विषाणु टीका पोलियो तथा लकवा की रोकथाम के लिए विश्व भर मे प्रयोग किया जाता है। O.P.V की एक खुराक मे 10^5 से 10^6 तक मध्यिका अणु होते है। यह दवा तीन प्रकार से तरल रूप मे पिलाई जाती है।

पहली खुराक जन्म के समय दी जाती है। दूसरी तथा तीसरी खुराक प्रति 4 से 8 सप्ताह के अन्तराल पर दी जाती है। इसके कारण कोई पीड़ा या ज्वर नही होता।

उद्‌भवन काल :- लगभग 7 से 12 दिन

लक्षण

(i) ज्वर लगभग 99°F से 100°F

(ii) सिरदर्द उल्टी तथा अतिसार।

(iii) कुछ बालक लकवा तथा अपंगता के प्रभावों से पीड़ित होते है।

कारक प्रतिनिधि :- विषाणु

Scanned with CamScanner

संक्रमण कारक :- दूषित पानी तथा अस्वच्छ भोजन

घटित होने की आयु :- विशेष रूप से बाल्यावस्था

अवधि

उपचार अवधि :- दो सप्ताह किन्तु मांसपेशियों के ठीक होने में विलम्ब।

रोगी की देखभाल :-

(i) उल्टी तथा बुखार पर नियंत्रण रखें।

(ii) बालक को उचित आराम दें।

(iii) चिकित्सक के निर्देशों का पालन करें।

रोकथाम :- पोलियों की दवा तीन खुराकों में दी जाती है जो छः सप्ताह बाद में 4 से 6 सप्ताह के अन्तराल पर दी जाती है।

Scanned with CamScanner

(c) हैजा :- यह बैसिलस जीवाणु द्वारा संक्रमित होता है जो विब्रिओ कोमा के नाम से जाना जाता है। यह रोग बहुत तीव्र गति से संक्रमित होता है। इसलिए महामारी का रूप धारण कर लेता है। यह गर्मी तथा बरसात के दिनों में अधिक होता है।

लक्षण :- (i) रोगी को उल्टी तथा पतले दस्त आते हैं।

(ii) रोगी को पेट में दर्द रहता है।

(iii) आँखें पीली पड़ जाती हैं।

(iv) उसे अधिक ठण्ड लगती है तथा अधिक प्यास लगती है और मूत्र आना बंद हो जाता है या बहुत कम मात्रा में आता है।

(v) उचित समय पर इलाज न मिलने पर शरीर में पानी की कमी हो जाती है तथा निर्जलीकरण हो जाता है।

फैलने के कारण :- (i) संक्रमित जल, दूध अथवा पेय पदार्थ।

(ii) अस्वच्छता का वातावरण

(iii) रोगी के गंदे वस्त्र

(iv) हैजे के रोगी देखभाल कर रहे व्यक्ति की अस्वच्छता के कारण

कारक तत्व :- विब्रिओकोमा।

संक्रमण काल :- 2-10 वर्ष।

उद्भवन काल :- 1-5 दिन।

प्रभावित अवस्था :- किसी भी आयु में रोग हो सकता है

रोग की अवधि तथा उपचार :- लम्बे समय तक देखभाल तथा उपचार होना चाहिए।

रोगी की देखभाल :- (i) बालक को प्रचुर मात्रा में तरल पदार्थ देने चाहिए ताकि पानी की कमी न हो सकें।

(ii) समय पर चिकित्सक को दिखाना चाहिए

(iii) रोगी को ~~स्वच्छ~~ स्वस्थ व्यक्तियों से अलग रखना चाहिए।

(v) देखभाल कर रहे व्यक्ति को अपनी स्वच्छता का विशेष ध्यान देना चाहिए।

रोकथाम :- डिहाइड्रेशन पद्धति का प्रयोग करें।

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

(6) अतिसार :- यह ऐसी अवस्था होती है जिसमें संक्रमण के कारण पेट की आँतों की कार्य प्रणाली सामान्य नहीं रहती। प्रमुख रूप से आँतों का महत्वपूर्ण कार्य अतिरिक्त जल का अवशोषण करना है। अतिसार रोगी की स्थिति में आँतें इस कार्य को नहीं कर पाती हैं इस कारण शरीर का अतिरिक्त जल मलद्वार द्वारा बाहर निष्कासित हो जाता है और जल के साथ कुछ अन्य आवश्यक खनिज लवण भी शरीर से बाहर निकल जाते हैं, इस प्रकार शरीर में जल की कमी हो जाती है।

अतिसार के प्रकार :- अतिसार प्रायः दो प्रकार होते हैं।
(I) अत्यधिक अतिसार
(II) दीर्घकालिक अतिसार

(I) अत्यधिक अतिसार :- यह लगभग २४-२८ घंटों तक रहता है।
(i) शौच में पतला पानी काफी निकलता है।
(ii) पेट में निरंतर दर्द व कमजोरी रहती है
(iii) हरे-पीले दस्त होते हैं, प्रत्येक बार दस्त होने से पूर्व पेट में ऐंठन होते हैं
(iv) रोगी को प्यास अधिक प्यास अधिक लगती है तथा पेशाब आना बंद हो जाता है।
(v) रोगी की नाड़ी धीमी व कमजोर हो जाती है।
(vi) शरीर में पानी के साथ लवण निकल जाने से माँसपेशियों में अकड़न होने लगती है।

(II) दीर्घकालिक अतिसार :- यह अतिसार लंबे समय तक चलता है। खाने पीने में लापरवाही करने से यह अतिसार बिगड़ जाता है। लम्बे समय तक अतिसार की स्थिति बनी रहने से रोगी बहुत कमजोर हो जाता है इस अवस्था में निर्जलीकरण हो जाता है तथा इसके निरंतर बने रहना रोगी की मृत्यु का कारण बन जाता है।

फैलने के कारण :- अस्वच्छता :-
कारक तत्व :- संक्रमण प्रतिनिधि तथा कृमि (पैरासाइटस)
संक्रमण काल :- सभी आयु
उद्भवन काल :- लगभग 3-6 दिन
घटित होने की अवस्था :- सभी अवस्था
रोग तथा उपचार की अवधि :- 3-6 दिन

Scanned with CamScanner

रोगी की देखभाल

(i) अधिक जल तथा तरल पदार्थों का प्रयोग करें।

(ii) पानी की कमी को पूरा करने के लिए अधिक मात्रा में बालक को तरल पदार्थ देना चाहिए।

(iii) छोटे बच्चों को माँ का दूध पिलाते रहना चाहिए।

(iv) रोगी को सामान्य आहार देते रहना चाहिए।

(v) बच्चों को दूध उबालकर तथा उबली हुई बोतल में डालकर ही पिलाना चाहिए।

(vi) भोज्य पदार्थ को मक्खियों से बचाना चाहिए तथा सदैव ढककर रखना चाहिए।

(vii) रोगी को रेशेदार पदार्थ हरी पत्तेदार सब्जियाँ, मोटे छिलके तथा बीजों वाले फल, तले पदार्थ, मिर्च मसाले, चटनी तथा अचार नहीं देने चाहिए।

रोकथाम :- पानी की कमी से बचने के लिए ओ. आर. एस. तथा ओ. आर. टी. का प्रयोग करें।

निर्जलीकरण :- निर्जलीकरण शरीर की वह स्थिति है जब आवश्यक जल की मात्रा शरीर में कम हो जाती है जब शरीर से अधिक जल हानि हो जाती ~~सकती~~ है

अतिसार एवं निर्जलीकरण में संबंध :- अतिसार एवं निर्जलीकरण में घनिष्ठ संबंध होता है। अधिकांशतः अतिसार की स्थिति में ही शरीर से अधिक मात्रा में जल का निष्कासन हो जाता है। अतिसार में जब दस्तों की संख्या काफी बढ़ जाती है तो शरीर से अधिक मात्रा में जल का निष्कासन हो जाता है। ऐसी स्थिति में पाचन शक्ति भी कमजोर हो जाती है और निर्जलीकरण की स्थिति आ जाती है।

Scanned with CamScanner